International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 06-02-2026, Accepted: 09-03-2026, Published: 24-03-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 411-414

आपराधिक जनजाति अधिनियम 1871 की ऐतिहासिक विरासत और अधिसूचित न की गई जनजातियों पर इसका प्रभाव

डॉ. कृष्ण कुमार
सहायक प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय, सिरसा, हरियाणा, भारत

Abstract
भारत में Denotified and Nomadic Tribes (DNTs) का इतिहास औपनिवेशिक नीतियों और सामाजिक बहिष्करण से गहराई से जुड़ा हुआ है। 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश सरकार ने Criminal Tribes Act 1871 लागू किया, जिसके तहत कई घुमंतू और अर्ध–घुमंतू समुदायों को जन्मजात अपराधी घोषित कर दिया गया। इस कानून ने इन समुदायों की सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक अवसरों और सांस्कृतिक पहचान पर गहरा नकारात्मक प्रभाव डाला। यद्यपि स्वतंत्रता के बाद इस कानून को समाप्त कर दिया गया और इन समुदायों को "Denotified Tribes" का दर्जा दिया गया, फिर भी सामाजिक लांछन और भेदभाव आज तक बना हुआ है। यह शोध–पत्र इस कानून की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उसके सामाजिक प्रभावों तथा वर्तमान समय में DNT समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों का विश्लेषण करता है।

मुख्य शब्द: आपराधिक जनजाति अधिनियम, अधिसूचित न की गई जनजातियाँ, औपनिवेशिक नीति, सामाजिक लांछन, हाशिए पर धकेलना

भारत की सामाजिक संरचना विविध जातीय, सांस्कृतिक और भाषाई समुदायों से निर्मित है। इन समुदायों में कुछ ऐसे समूह भी हैं जो ऐतिहासिक रूप से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से हाशिए पर रहे हैं। Denotified and Nomadic Tribes (DNTs) ऐसे ही समुदायों में शामिल हैं, जिनका जीवन लंबे समय तक सामाजिक बहिष्करण, गरीबी और भेदभाव से प्रभावित रहा है। इन समुदायों की वर्तमान स्थिति को समझने के लिए उनके ऐतिहासिक संदर्भ और औपनिवेशिक नीतियों का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है।

औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश सरकार ने भारतीय समाज को नियंत्रित करने और प्रशासनिक व्यवस्था को मजबूत करने के उद्देश्य से कई कठोर कानून लागू किए। इन्हीं कानूनों में एक महत्वपूर्ण कानून था Criminal Tribes Act 1871। इस कानून के तहत अनेक घुमंतू और अर्ध–घुमंतू समुदायों को "जन्मजात अपराधी" घोषित कर दिया गया। परिणामस्वरूप इन समुदायों के सदस्यों की गतिविधियों पर कड़ी निगरानी रखी गई, उनकी आवाजाही को सीमित कर दिया गया और उन्हें पुलिस प्रशासन के अधीन विशेष नियंत्रण में रखा गया।

इस कानून का प्रभाव केवल कानूनी या प्रशासनिक स्तर तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने इन समुदायों की सामाजिक पहचान और सम्मान को भी गहराई से प्रभावित किया। पूरे समुदाय को अपराधी के रूप में देखने की मानसिकता समाज में विकसित हो गई, जिससे उन्हें शिक्षा, रोजगार और सामाजिक अवसरों से वंचित होना पड़ा।

भारत की स्वतंत्रता के बाद इस कानून की आलोचना बढ़ी और अंततः 1952 में इसे समाप्त कर दिया गया। इसके बाद इन समुदायों को "Denotified Tribes" कहा जाने लगा। हालांकि, कानूनी रूप से इस लांछन को हटाए जाने के बावजूद सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन धीरे–धीरे हुआ और कई स्थानों पर आज भी इन समुदायों को संदेह और भेदभाव का सामना करना पड़ता है।

वर्तमान समय में DNT समुदाय शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक सम्मान जैसी कई चुनौतियों से जूझ रहे हैं। इनकी समस्याओं को समझने और उनके समाधान के लिए विभिन्न सरकारी और सामाजिक प्रयास किए जा रहे हैं, जिनमें National Commission for Denotified, Nomadic and Semi-Nomadic Tribes की स्थापना भी एक महत्वपूर्ण कदम है।

इस शोध–पत्र का उद्देश्य Criminal Tribes Act 1871 की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना तथा यह विश्लेषण करना है कि इस कानून की विरासत ने Denotified Tribes की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति को किस प्रकार प्रभावित किया है। साथ ही, समकालीन भारत में इन समुदायों के सामने मौजूद चुनौतियों और उनके समाधान के संभावित उपायों पर भी चर्चा की जाएगी।

औपनिवेशिक संदर्भ: 19वीं शताब्दी में भारत पर ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन स्थापित हो चुका था और प्रशासनिक नियंत्रण को मजबूत करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने विभिन्न प्रकार के कानून और नीतियाँ लागू कीं। औपनिवेशिक शासन का मुख्य उद्देश्य भारत में राजनीतिक स्थिरता बनाए रखना, आर्थिक संसाधनों का दोहन करना और सामाजिक समूहों पर नियंत्रण स्थापित करना था। इस प्रक्रिया में कई ऐसे कानून बनाए गए जिनका प्रभाव भारतीय समाज के अनेक समुदायों पर दीर्घकालिक रूप से पड़ा।

ब्रिटिश प्रशासन के लिए घुमंतू और अर्ध–घुमंतू समुदाय एक चुनौती माने जाते थे, क्योंकि उनका जीवन स्थायी निवास से जुड़ा नहीं था और वे पारंपरिक रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे। औपनिवेशिक अधिकारियों को यह जीवन शैली प्रशासनिक नियंत्रण के लिए कठिन लगती थी। इसी कारण इन समुदायों को अक्सर संदेह की दृष्टि से देखा गया और उन्हें अपराध प्रवृत्ति से जोड़कर प्रस्तुत किया गया।

इसी संदर्भ में 1871 में Criminal Tribes Act 1871 लागू किया गया। इस कानून के तहत कई घुमंतू जातियों और जनजातियों को "क्रिमिनल ट्राइब्स" घोषित कर दिया गया। इस अधिनियम के अनुसार इन समुदायों के सभी सदस्यों को जन्म से ही अपराधी माना जाता था और उनकी गतिविधियों पर पुलिस और प्रशासन द्वारा कड़ी निगरानी रखी जाती थी। उन्हें नियमित रूप से पंजीकरण कराना पड़ता था और उनकी आवाजाही पर भी नियंत्रण लगाया जाता था।

इस कानून के माध्यम से ब्रिटिश सरकार ने लगभग 200 से अधिक जातियों को इस श्रेणी में शामिल किया। परिणामस्वरूप इन समुदायों की सामाजिक प्रतिष्ठा पर गंभीर आघात पहुँचा और समाज में उनके प्रति नकारात्मक धारणा विकसित हो गई। यह

कानून न केवल प्रशासनिक नियंत्रण का साधन था, बल्कि इसने औपनिवेशिक शासन की उस मानसिकता को भी दर्शाया जिसमें कुछ समुदायों को जन्मजात अपराधी मान लिया गया था।
इस प्रकार औपनिवेशिक शासन की नीतियों और कानूनों ने Denotified and Nomadic Tribes की सामाजिक स्थिति को गहराई से प्रभावित किया। यद्यपि स्वतंत्रता के बाद इस कानून को समाप्त कर दिया गया, फिर भी इसका प्रभाव आज भी इन समुदायों की सामाजिक पहचान और जीवन परिस्थितियों में देखा जा सकता है।

सामाजिक पहचान पर प्रभाव: Criminal Tribes Act 1871 का सबसे गहरा और दीर्घकालिक प्रभाव Denotified and Nomadic Tribes की सामाजिक पहचान पर पड़ा। इस कानून के माध्यम से पूरे समुदायों को "जन्मजात अपराधी" घोषित कर दिया गया, जिसके कारण समाज में उनके प्रति नकारात्मक और संदेहपूर्ण दृष्टिकोण विकसित हो गया। यह केवल एक कानूनी श्रेणी नहीं थी, बल्कि एक सामाजिक लांछन बन गया जिसने इन समुदायों के जीवन को गहराई से प्रभावित किया।
सबसे पहले, इस कानून के कारण DNT समुदायों की सामाजिक प्रतिष्ठा को गंभीर क्षति पहुँची। जब किसी पूरे समुदाय को अपराधी के रूप में चिह्नित किया जाता है, तो समाज के अन्य वर्गों में उनके प्रति अविश्वास और दूरी की भावना उत्पन्न हो जाती है। परिणामस्वरूप, इन समुदायों को मुख्यधारा के सामाजिक जीवन से अलग–थलग कर दिया गया।
दूसरे, इस कानून ने इन समुदायों की सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility) को सीमित कर दिया। सामाजिक लांछन के कारण उन्हें शिक्षा, रोजगार और आर्थिक अवसरों तक पहुंचने में कठिनाई हुई। कई बार इन समुदायों के लोगों को केवल उनके जातीय पहचान के आधार पर ही संदेह की दृष्टि से देखा जाता था, जिससे उनके लिए सम्मानजनक जीवन जीना कठिन हो गया।
तीसरे, इस कानून के प्रभाव से इन समुदायों की सांस्कृतिक पहचान और आत्मसम्मान भी प्रभावित हुआ। लगातार निगरानी और भेदभाव के कारण कई पारंपरिक पेशे और सांस्कृतिक गतिविधियाँ कमजोर पड़ गईं। इससे उनकी सामुदायिक पहचान और सांस्कृतिक विरासत पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा।
हालाँकि भारत की स्वतंत्रता के बाद 1952 में इस कानून को समाप्त कर दिया गया और इन समुदायों को "Denotified Tribes" के रूप में मान्यता दी गई, फिर भी सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन धीरे–धीरे हुआ। कई स्थानों पर आज भी इन समुदायों को पूर्वाग्रह और सामाजिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है।
इस प्रकार, औपनिवेशिक काल में लागू किया गया Criminal Tribes Act 1871 केवल एक प्रशासनिक कानून नहीं था, बल्कि उसने Denotified and Nomadic Tribes की सामाजिक पहचान पर ऐसा स्थायी प्रभाव छोड़ा, जिसके परिणाम आज भी भारतीय समाज में देखे जा सकते हैं।

स्वतंत्रता के बाद परिवर्तन: भारत की स्वतंत्रता के बाद देश की नई लोकतांत्रिक सरकार ने औपनिवेशिक काल के कई भेदभावपूर्ण कानूनों और नीतियों की समीक्षा की। इन्हीं में से एक प्रमुख कानून था Criminal Tribes Act 1871, जिसे औपनिवेशिक शासन द्वारा कई घुमंतू और अर्ध–घुमंतू समुदायों को नियंत्रित करने के उद्देश्य से लागू किया गया था। इस कानून की व्यापक आलोचना हुई क्योंकि यह पूरे समुदायों को जन्म से ही अपराधी मानने की अवधारणा पर आधारित था, जो मानवाधिकार और न्याय के सिद्धांतों के विरुद्ध थी।
स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय सरकार ने इस कानून को समाप्त करने की दिशा में कदम उठाए और अंततः 1952 में इसे निरस्त कर दिया गया। इसके बाद जिन समुदायों को पहले "क्रिमिनल ट्राइब्स" कहा जाता था, उन्हें "Denotified Tribes" के रूप में मान्यता दी गई। यह परिवर्तन इन समुदायों के लिए एक महत्वपूर्ण कानूनी और सामाजिक कदम था, क्योंकि इससे उन्हें औपचारिक रूप से अपराधी की श्रेणी से मुक्त किया गया।
हालाँकि, कानून समाप्त होने के बावजूद इन समुदायों की सामाजिक स्थिति में तत्काल और व्यापक सुधार नहीं हो सका। समाज में पहले से मौजूद पूर्वाग्रह और संदेह की भावना लंबे समय तक बनी रही। कई स्थानों पर पुलिस और प्रशासन द्वारा इन समुदायों को अभी भी संदेह की दृष्टि से देखा जाता रहा।
स्वतंत्रता के बाद सरकार ने इन समुदायों के विकास और सामाजिक समावेशन के लिए विभिन्न नीतियाँ और कार्यक्रम शुरू किए। इन प्रयासों को सुदृढ़ करने के लिए बाद में National Commission for Denotified, Nomadic and Semi-Nomadic Tribes का गठन किया गया, जिसका उद्देश्य इन समुदायों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना और उनके उत्थान के लिए नीतिगत सुझाव देना था।
फिर भी, शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और सामाजिक सम्मान के क्षेत्र में Denotified Tribes को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए यह आवश्यक है कि सरकार और समाज मिलकर ऐसे प्रभावी कदम उठाएँ, जिनसे इन समुदायों को विकास की मुख्यधारा में शामिल किया जा सके और उन्हें समान अवसर प्रदान किए जा सकें।

समकालीन चुनौतियाँ: यद्यपि Criminal Tribes Act 1871 को स्वतंत्रता के बाद समाप्त कर दिया गया और इन समुदायों को "विमुक्त (Denotified) जनजातियाँ" कहा जाने लगा, फिर भी आज के समय में ये समुदाय अनेक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। औपनिवेशिक काल में लगाए गए सामाजिक लांछन का प्रभाव आज भी इनके जीवन में दिखाई देता है।
सबसे प्रमुख समस्या सामाजिक लांछन और भेदभाव की है। औपनिवेशिक शासन के दौरान इन समुदायों को अपराधी के रूप में चिह्नित कर दिया गया था, जिसके कारण समाज में उनके प्रति अविश्वास और संदेह की भावना विकसित हो गई। स्वतंत्रता के बाद इस कानून को समाप्त कर दिया गया, लेकिन सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन धीरे–धीरे हुआ। आज भी कई स्थानों पर इन समुदायों के लोगों को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है।
दूसरी बड़ी चुनौती शिक्षा की कमी है। Denotified और घुमंतू जनजातियों के अधिकांश परिवार आर्थिक रूप से कमजोर हैं और कई बार उनका स्थायी निवास भी नहीं होता। इस कारण बच्चों की नियमित शिक्षा प्रभावित होती है और विद्यालयों में उनकी उपस्थिति कम रहती है। शिक्षा के अभाव में इनके लिए रोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त करना कठिन हो जाता है।
तीसरी महत्वपूर्ण समस्या आर्थिक अस्थिरता और बेरोजगारी है। पारंपरिक आजीविकाएँ जैसे लोक कला, हस्तशिल्प, पशुपालन और घुमंतू व्यापार आधुनिक आर्थिक परिवर्तनों के कारण धीरे–धीरे समाप्त हो रहे हैं। इससे इन समुदायों की आय के स्रोत सीमित हो गए हैं और गरीबी की समस्या बढ़ गई है।
इसके अतिरिक्त, कई Denotified जनजातियों के लोगों के पास स्थायी निवास, पहचान पत्र और सरकारी दस्तावेज़ों की कमी होती है। इसके कारण वे सरकारी योजनाओं और कल्याणकारी कार्यक्रमों का पूरा लाभ नहीं उठा पाते। इन समस्याओं के समाधान के लिए सरकार ने कई नीतिगत प्रयास किए हैं, जिनमें विशेष रूप से National Commission for Denotified] Nomadic and Semi&Nomadic Tribes की स्थापना महत्वपूर्ण है। इस आयोग का उद्देश्य इन समुदायों की सामाजिक और

आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना तथा उनके विकास के लिए नीतिगत सुझाव देना है।

हालाँकि इन प्रयासों के बावजूद Denotified और Nomadic Tribes का समग्र विकास अभी भी एक बड़ी चुनौती बना हुआ है। इसलिए आवश्यक है कि शिक्षा, रोजगार, सामाजिक जागरूकता और नीतिगत समर्थन के माध्यम से इन समुदायों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ा जाए और उन्हें समान अवसर प्रदान किए जाएँ।

नीतिगत उपाय: Denotified और Nomadic Tribes (DNTs) के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए प्रभावी नीतिगत उपायों की आवश्यकता है। ऐतिहासिक रूप से इन समुदायों ने सामाजिक बहिष्करण, गरीबी और भेदभाव का सामना किया है, जिसका मुख्य कारण औपनिवेशिक काल में लागू किया गया Criminal Tribes Act 1871 था। यद्यपि स्वतंत्रता के बाद इस कानून को समाप्त कर दिया गया, फिर भी इसके प्रभावों को कम करने के लिए विशेष नीतियों और योजनाओं की आवश्यकता बनी हुई है।

सबसे पहले, शिक्षा के क्षेत्र में विशेष पहल करना आवश्यक है। Denotified और घुमंतू जनजातियों के बच्चों के लिए छात्रवृत्ति, आवासीय विद्यालय और विशेष शैक्षिक कार्यक्रमों की व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे वे नियमित रूप से शिक्षा प्राप्त कर सकें। शिक्षा इन समुदायों के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण का सबसे प्रभावी माध्यम है।

दूसरा महत्वपूर्ण उपाय रोजगार और कौशल विकास से संबंधित है। सरकार को इन समुदायों के लिए कौशल विकास कार्यक्रम, स्वरोजगार योजनाएँ और लघु उद्योगों को प्रोत्साहन देना चाहिए। इससे इन समुदायों के लोगों को स्थायी और सम्मानजनक आजीविका के अवसर मिल सकते हैं।

तीसरा, पहचान और नागरिक अधिकारों की सुनिश्चितता भी अत्यंत आवश्यक है। कई Denotified Tribes के पास पहचान पत्र, स्थायी निवास और अन्य सरकारी दस्तावेज़ नहीं होते, जिसके कारण वे सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं उठा पाते। इसलिए सरकार को इन समुदायों के लिए पहचान दस्तावेज़ और आवास संबंधी सुविधाएँ सुनिश्चित करनी चाहिए।

इसके अतिरिक्त, इन समुदायों के विकास के लिए सरकार ने विभिन्न आयोगों और समितियों का गठन किया है, जिनमें विशेष रूप से National Commission for Denotified, Nomadic and Semi-Nomadic Tribes का गठन उल्लेखनीय है। इस आयोग का उद्देश्य इन समुदायों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना और उनके विकास के लिए प्रभावी नीतिगत सुझाव देना है।

अंततः, सामाजिक जागरूकता और समावेशन भी एक महत्वपूर्ण नीतिगत उपाय है। समाज में Denotified और Nomadic Tribes के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए जागरूकता कार्यक्रमों और सामाजिक अभियानों को बढ़ावा देना चाहिए। इससे सामाजिक भेदभाव को कम किया जा सकता है और इन समुदायों को समाज की मुख्यधारा में शामिल किया जा सकता है।

इस प्रकार, शिक्षा, रोजगार, पहचान अधिकार और सामाजिक जागरूकता से जुड़े प्रभावी नीतिगत उपायों के माध्यम से Denotified और Nomadic Tribes के समग्र विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है।

निष्कर्ष

Denotified और Nomadic Tribes (DNTs) का इतिहास भारत के औपनिवेशिक अतीत और सामाजिक संरचना से गहराई से जुड़ा हुआ है। औपनिवेशिक काल में लागू किया गया Criminal Tribes Act 1871 केवल एक प्रशासनिक कानून नहीं था, बल्कि इसने अनेक समुदायों की सामाजिक पहचान और जीवन परिस्थितियों को गहराई से प्रभावित किया। इस कानून के माध्यम से कई घुमंतू और अर्ध–घुमंतू समुदायों को जन्मजात अपराधी घोषित कर दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें सामाजिक बहिष्करण, भेदभाव और आर्थिक अस्थिरता का सामना करना पड़ा।

यद्यपि भारत की स्वतंत्रता के बाद 1952 में इस कानून को समाप्त कर दिया गया और इन समुदायों को "विमुक्त (Denotified) जनजातियाँ" के रूप में मान्यता दी गई, फिर भी औपनिवेशिक काल में लगाए गए सामाजिक लांछन का प्रभाव पूरी तरह समाप्त नहीं हो पाया। आज भी इन समुदायों को शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सुविधाओं और सामाजिक सम्मान से जुड़ी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

वर्तमान समय में सरकार और विभिन्न सामाजिक संस्थाओं द्वारा इन समुदायों के विकास के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं। विशेष रूप से National Commission for Denotified, Nomadic and Semi-Nomadic Tribes की स्थापना इन समुदायों की समस्याओं को समझने और उनके समाधान के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। इसके बावजूद इन समुदायों के समावेशी विकास के लिए और अधिक प्रभावी नीतियों तथा योजनाओं की आवश्यकता है।

अत: यह आवश्यक है कि सरकार, सामाजिक संगठन और अकादमिक जगत मिलकर Denotified और Nomadic Tribes के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक विकास के लिए समन्वित प्रयास करें। शिक्षा, कौशल विकास, सामाजिक जागरूकता और नीतिगत समर्थन के माध्यम से ही इन समुदायों को भारतीय समाज की मुख्यधारा में सम्मानजनक स्थान दिलाया जा सकता है। इस प्रकार, ऐतिहासिक अन्याय को दूर करते हुए सामाजिक न्याय और समानता की दिशा में ठोस कदम उठाना समय की आवश्यकता है।

References

1. Radhakrishna M. Dishonoured by history: Criminal tribes and British colonial policy. Orient Longman., 2001.
2. Devy GN. The denotified and nomadic tribes of India. Routledge India., 2018.
3. Rao A. The other nomads: Peripatetic minorities in cross-cultural perspective. Böhlau Verlag., 1987.
4. Pandian A. Crooked stalks: Cultivating virtue in South India. Duke University Press., 2009.
5. Government of India. Report of the National Commission for Denotified, Nomadic and Semi-Nomadic Tribes. Ministry of Social Justice and Empowerment., 2018.
6. National Commission for Denotified, Nomadic and Semi-Nomadic Tribes. Final report and recommendations. Government of India., 2018.
7. Ministry of Social Justice and Empowerment. Development and welfare schemes for Denotified, Nomadic and Semi-Nomadic Tribes. Government of India., 2019.
8. Criminal Tribes Act 1871. Government of British India., 1871.
9. Rao A. Nomadic communities and development challenges in India. Indian Anthropologist,2015:45(2):45–60.
10. Sharma S. Social exclusion and marginalized communities in India. Journal of Social Sciences,2017:12(3):120–130.

11. Dirks NB. Castes of mind: Colonialism and the making of modern India. Princeton University Press., 2001.
12. Guha R. Elementary aspects of peasant insurgency in colonial India. Oxford University Press., 1999.
13. Bayly S. Caste, society and politics in India from the eighteenth century to the modern age. Cambridge University Press., 2001.